Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ केदार गौरी पूजा विधि ॥

॥ जय केदारेश्वर गौरी ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ संकल्प और दैनिक पूजन ॥

१. तिथि और रूप चुनें

दीपावली अमावस्या को मुख्य पूजन की परंपरा है। कुछ परिवार उससे पहले इक्कीस दिन का संकल्प लेते हैं और कई परिवार केवल मुख्य दिन पूजा करते हैं। तिथि, आरंभ और पूजा समय स्थानीय पंचांग तथा अपनी परंपरा से देखें।

२. स्थान और स्थापना

स्नान करके स्वच्छ चौकी पर शिव-गौरी का चित्र या शिवलिंग रखें। कलश की रीति हो तो साफ पात्र में जल भरकर अन्न पर स्थिर रखें और ऊपर पत्ते-नारियल सजाएँ। तोरम को पास रखें। गणेशजी का स्मरण कर संकल्प लें।

३. सरल दैनिक पूजा

दीर्घ संकल्प में प्रतिदिन पुष्प, जल प्रतीक रूप में, दीप और नैवेद्य अर्पित करें। “ॐ नमः शिवाय” का जप करें। शिव-गौरी की कथा पढ़ें या सुनें। चित्र पर सीधे जल न चढ़ाएँ।

धागे की गाँठें या विशेष उपचार परिवार के अनुसार करें। इक्कीस दिनों के लिए कठोर या निर्जल उपवास करना आवश्यक नहीं है।

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ अमावस्या का विशेष पूजन ॥

४. केदारेश्वर और गौरी का आवाहन

मुख्य दिन पूजा स्थान फिर साफ करें। शिव और गौरी का ध्यान करके कलश, शिवलिंग या चित्र के सामने पुष्प-अक्षत अर्पित करें। बिल्वपत्र, चंदन, हल्दी-कुमकुम, धूप, दीप और उपलब्ध प्रसाद चढ़ाएँ।

५. कथा, आरती और सूत्र

भृंगी ऋषि और अर्धनारीश्वर का प्रसंग पढ़ें। अपनी परंपरा में तोरम हो तो उसे पूजकर घर की रीति से बाँधें। आरती करें और प्रसाद सबके साथ बाँटें। विस्तृत षोडशोपचार के लिए पुरोहित या परिवार की पुस्तिका देखें।

६. समापन और भोजन

दीर्घ संकल्प का समापन प्रार्थना, दान और परिवार की रीति से करें। उपवास हो तो अपनी सेहत के अनुसार भोजन-पानी लें। बीमारी, गर्भावस्था, मधुमेह या दवा की स्थिति में चिकित्सकीय सलाह को प्राथमिकता दें।

दीपावली पर कई दीप जलते हैं; उन्हें बिना निगरानी न छोड़ें। पूजा का सार शिव-शक्ति का संयुक्त स्मरण और संबंधों में सम्मान है।

॥ ॐ अर्धनारीश्वराय नमः ॥